शरयिा का परचिय (2 का भाग 2)

ववविरण: इस पाठ में शरयिा और फ़िक़्ह की मूल बातें शामलि हैं जो इस्लामी नयिमों और वनियिमों के आंतरकि कार्य को समझने के लएि आवश्यक है।

द्वारा Imam Mufti (© 2013 NewMuslims.com)

प्रकाशति हुआ 08 Nov 2022 - अंतमि बार संशोधति 07 Nov 2022

श्रेणी: पाठ >इस्लाम के गुण > इस्लाम की उतकृष्ट वशिषताएं

उद्देश्य:

· फ़िक़्ह की परभिाषा और शरयिा से इसका संबंध जानना।

· शरयिा और फ़िक़्ह की तुलना करना और वषिमता जानना।

· फ़िक़्ह के "पांच" नयिमों के बारे में जानना।

· फ़िक़्ह के क्रमागत उन्नतकि के छह चरणों को समझना।

· एक मुस्लमि न्यायवदि (फ़क़ीह) की सामान्य और वशिष्टि योग्यताओं को समझना।

· मुस्लमि दुनयिा में सीखने की प्रमुख स्थतिकि के बारे में जानना।

· पश्चमि में प्रमुख फ़िक़्ह परषिदों के बारे में जानना।

अरबी शब्द:

· फ़क़ीह (बहुवचन फुक़हा) - मुस्लमि न्यायवदि (न्यायशास्त्री)।

· *□□□□□□□* - इस्लामी न्यायशास्त्र।

· *□□□□* - (बहुवचन - हदीसें) यह एक जानकारी या कहानी का एक टुकड़ा है। इस्लाम में यह पैगंबर मुहम्मद और उनके साथयिों के कथनों और कार्यों का एक वर्णनात्मक रकिॉर्ड है।

· *□□□□* - नषिद्धि।

· *□□□□□* - नापसंद।

· *□□□□□ □□□□□□□□* - सार्वजनकि हति।

· *□□□□□* - जसिकी अनुमतकि है।

· *□□□□□□□* - अनुशंसति।

· *□□□□□□* - सादृश्य।

· *□□□□□* - इस्लामी कानून।

· ?????? - अध्ययन के क्षेत्र के आधार पर सुन्नत शब्द के कई अर्थ हैं, हालांकि आम तौर पर इसका अर्थ है जो कुछ भी पैगंबर ने कहा, किया या करने को कहा।

· ????? - अनिवार्य।

शरिया निश्चित नियम है जिसे अल्लाह ने क़ुरआन, सुन्नत और इनसे निकलने वाले अन्य स्रोतों में कानून बनाया है।

दूसरी ओर, फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) को शरिया के व्यावहारिक नियमों के ज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया है जो स्रोतों में विस्तृत साक्ष्य से प्राप्त होते हैं।[1]

इसलिए, शरिया लक्ष्य है, फ़िक़्ह रास्ता है। फ़िक़्ह विशेष पुस्तकों और विश्वकोशों में निहित है। यह नियमों और विनियमों का संकलन है।

फ़िक़्ह में इस्लाम के प्रसिद्ध व्यावहारिक धार्मिक मामले शामिल हैं। इनमें स्पष्ट शब्दो में बताए गए नियम शामिल हैं। इसके दो उदाहरण हैं, पांच दैनिक प्रार्थना का कर्तव्य और शराब का निषेध। वे निश्चित और स्पष्ट हैं। फ़िक़्ह में धार्मिक मामलों के कई प्रत्याशित व्यावहारिक विवरण भी शामिल हैं। क्या रक्तस्राव वुज़ू को अमान्य कर देता है? क्या वुज़ू में पूरे सिर या उसके केवल एक हिस्से को पोंछना आवश्यक है? इस तरह के विस्तृत सवालों के जवाब फ़िक़्ह की किताबों में मिलते हैं।

शरिया और फ़िक़्ह के बीच क्या संबंध है? [2]

1. **शरिया अल्लाह द्वारा प्रकट किए गए वास्तविक नियम है।** उनके बीच कोई अंतर्विरोध या संघर्ष नहीं है। यह सभी मुसलमानों के लिए बाध्यकारी है। फ़िक़्ह इस्लाम के विद्वानों (फुक़हा या न्यायशास्त्रियों) द्वारा शरिया के ग्रंथों या अन्य तरीकों जैसे कि क़ियास और मसलहाह मुर्सलाह से लिया गया है। ये छोटे नियम शरिया से मेल खाने वाले भी हो सकते हैं और नहीं भी। दूसरे शब्दों में, जब कोई विद्वान अपनी समझ में सही होता है, तो शरिया और फ़िक़्ह आपस मे मेल खाते हैं। जब कोई विद्वान गलती करता है, तो शरिया और फ़िक़्ह मेल नही खाते। शरिया फ़िक़्ह के भीतर पाया जाता है।[3]

2. **शरिया मुकम्मल है, फ़िक़्ह नहीं।** शरिया मूल रूप से सामान्य सिद्धांत हैं जिनसे हमारे दैनिक जीवन के सभी पहलुओं के लिए मार्गदर्शन प्राप्त होता है। दूसरी ओर, फ़िक़्ह कई मामलों में विद्वानों की राय है। अधिकांशतः शरिया दिशानिर्देश प्रदान करता है जिसे फ़िक़्ह में विस्तार से बताया जाता है।

3. शरिया सामान्य है और फ़िक़्ह के विपरीत सभी मनुष्यों को संबोधित करता है।

4. **शरिया बाध्यकारी है जबकि फ़िक़्ह के हिस्से बाध्यकारी नहीं हैं।** फ़िक़्ह एक विशिष्ट स्थान के लिए समकालीन समाज को प्रासंगिक उत्तर प्रदान करता है। शरिया समय और स्थान से मुक्त है। शरिया ज्यादातर सामान्य निर्देश प्रदान करता है जबकि विशेष और अभूतपूर्व मुद्दों के विस्तृत समाधान फ़िक़्ह में मिलते हैं।

5. **शरिया संपन्न है जबकि फ़िक़्ह नहीं है।** शरिया में त्रुटियां नहीं हैं क्योंकि इसे ईश्वरीय रहस्योद्घाटन माना जाता है, लेकिन फ़िक़्ह कभी-कभी गलत हो सकता है क्योंकि यह एक मानवीय प्रयास और तर्क का उत्पाद है।

फ़िक़्ह के नयिम

फ़िक़्ह के नयिमों को पांच मूल्यों के पैमाने पर वर्गीकृत कयिा गया है:

1. वाजबि (अनविार्य): जो मुसलमान के लएि आवश्यक है, जैसे पांच दैनकि नमाज़।

2. मुस्तहब (अनुशंसति): जो मुसलमान को करने के लएि प्रोत्साहति कयिा जाता है, जैसे सोमवार और गुरुवार को उपवास करना।

3. मुबाह (जसिकी अनुमतहिै): जो मुसलमान को कुछ करने या न करने के लएि कहा जाता है, जैसे कएिक नश्चिति भोजन या पेय चुनना।

4. मकरूह (नापसंद): जो मुसलमान के लएि छोड़ना बेहतर है, जैसे खाना परोसते समय प्रार्थना करना।

5. हराम (नषिद्धि): जसि चीज से मुसलमान को मना कयिा जाता है, जैसे व्यभचिार और चोरी।

फ़िक़्ह के क्रमागत उन्नतकिे चरण

फ़िक़्ह को समय के साथ मुस्लमि दुनयिा के वभिन्नि भौगोलकि क्षेत्रों में वकिसति कयिा गया था। 1400 वर्षों की अवधमिें इसके वकिास को छह चरणों में वर्गीकृत कयिा जा सकता है[4]:

1. नींव: पैगंबर मुहम्मद (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) का युग, 609 - 632 सीई।

2. स्थापना: धर्मी खलीफाओं का युग, 632 - 661 सीई।

3. नर्माण: उमय्यद वंश का युग, 661 सीई से 8वीं शताब्दी तक।

4. वकिास: अब्बासदि वंश के उत्थान और पतन का युग, 8वीं शताब्दी से 10वीं शताब्दी के मध्य तक।

5. एकत्रीकरण: अब्बासदि वंश के पतन से लेकर अंतमि अब्बासदि खलीफा की हत्या तक, 960 सीई से 13वीं शताब्दी के मध्य तक।

6. ठहराव और गरिावट: बगदाद की बर्खास्तगी से लेकर वर्तमान तक, 1258 सीई से अब तक।

एक फ़क़ीह (मुस्लमि न्यायवदि) की योग्यता

फ़िक़्ह में वशिेषज्ञता रखने वाले एक इस्लामी वद्विान की तीन बुनयिादी योग्यताएं होती हैं:

1. इस्लाम का ज्ञान उसके स्रोतों से: क़ुरआन, सुन्नत, सर्वसम्मत,ि और न्यायशास्त्रीय सादृश्य (क़यिास)।

2. समसामयकि मुद्दों से ठीक से नपिटने में सक्षम होने के लएि समाज की मौजूदा परस्थितियिों को समझना।

3. पवत्रिता और अच्छी मंशा।

अधकि वशिेष रूप से, एक फ़िक़्ह वशिेषज्ञ वद्विान (फ़क़ीह) को ज्ञान होना चाहएि:

· अरबी भाषा और उसके शास्र का।

- क़ुरआन में कानून के छंद और उनकी व्याख्या का।
- कानून की हदीस और उनकी व्याख्या का।
- प्रामाणकि और कमजोर हदीस के बीच अंतर कर सकने का।
- कौन सी आयतें और हदीस नरिस्त कर दी गई हैं और कौन सी चालू हैं।
- सामान्य और वशिषि्ट, अप्रतबिंधति और प्रतबिंधति, शब्दों की स्पष्टता के वभिन्नि स्तर के बीच अंतर कर सकने का।
- मुद्दों पर वद्विानों की राय जानना कि वे कहां भन्नि हैं और वे कहां सहमत हैं।
- जानना कि कियास कैसे बनाया जाता है।
- समझना कि परस्पर वरिोधी साक्ष्यों को कैसे सुलझाया जाए।
- शरयिा के लक्ष्यों और उनकी वभिन्नि प्राथमकिताओं को समझने का।

मुस्लमि दुनयिा में सीखने के प्रमुख स्थान

मुस्लमि दुनयिा में सीखने के प्रमुख संस्थान मस्रि में अल-अजहर वश्विवद्यिालय, ट्यूनीशयिा में जैतुना वश्विवद्यिालय, सऊदी अरब में इमाम मुहम्मद इब्न सऊद वश्विवद्यिालय, सूडान में उम्म दारमन वश्विवद्यिालय, सऊदी अरब में मदीना के इस्लामी वश्विवद्यिालय और भारत में दार उल उलूम देवबंद हैं। कई मुस्लमि वद्विान या तो वहां प्रशक्षिति होते हैं, या इन केंद्रों से संबंधति या प्रभावति संस्थानो से प्रशक्षिति होते हैं।

पश्चमि में प्रमुख फ़क़िह परषिद

कई प्रमुख इस्लामी फ़क़िह परषिदें हैं जनिमें दुनयिा भर के प्रसद्धि मुस्लमि वद्विान शामलि हैं। सबसे प्रसद्धि मक्का, जेद्दा, काहरिा और भारत में हैं। पश्चमि में रहने वाले मुसलमानों के लएि तीन प्रमुख फ़क़िह परषिदें अमेरकिा के मुस्लमि न्यायवदिों की सभा, फतवा और अनुसंधान के लएि यूरोपीय परषिद और उत्तरी अमेरकिा की फ़क़िह परषिद हैं।

फुटनोट:

[1] डॉ. उमर अल-अश्कर द्वारा लखिति अल-मदखल इला अल-शरयिा व फ़क़िह अल-इस्लामी, पृष्ठ 36

[2] डॉ. उमर अल-अश्कर द्वारा लखिति अल-मदखल इला अल-शरयिा व फ़क़िह अल-इस्लामी, पृष्ठ 42-43

[3] यूसुफ अल-क़रादावी द्वारा लखिति मदखल ली-दरिासा अल-शरयिा अल-इस्लामयिा, पृष्ठ 22

[4] डॉ. बलिाल फलिप्सि द्वारा लखिति द इवोल्यूशन ऑफ़ फ़क़िह, पृष्ठ 17-18

इस लेख का वेब पता:
http://www.newmuslims.com/hi/lessons/205

कॉपीराइट © 2011-2022 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।

ajsultan